

DPN 6373

Title : चाणक्यसार संग्रह / CĀNAKYA SĀRASANĠGRAHA
(Together with Newari translation)

Run. No. 7064

Cat. No.

Micro. No.

Subject Nītiśāstra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 25.5 x 12

Folios 20

Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

Folios 1-11, 26-33 are missing. last available folio is 39 -

Chapt. / act /

Author / translator Cāṇakya

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Folio 20 b: इति श्रीचानक्यनानाशास्त्रसंग्रहे प्रथम शतके ॥ १ ॥

सयाथायुषक्षयं ॥ संभ्यासनलसाव्याधिजायलपीव मैथुनयातसाकुपु
त्रजायलपीव देनसालक्ष्मीमोर्ध्व वेदयाठयातसा आयुक्षयजुर्ध्व ॥ ५१ ॥
वेदवेदांगतन्मशोजयहोमयगयन ॥ आसिर्वारयरोनित्यं ययराभापुरोहित
ज्वलंवांस्तरावेदवेदांगतत्त्वसेव जयहोमक्रियासव आसिर्वोदवियहाव
थिइहंवांस्तरा राजाया प्रोहितयायजोय ॥ ५२ ॥ प्राग्यस्त्रिधोमहिषालक्षि
कर्मविवर्जित ॥ विदुरेयियरित्यागिसम दुःखः समसुखं ॥ ॥ ज्ञानीकोमलक्षि
इवचरामल्लोक आयदावेलसत्यागी जुव दुःखसुखतुल्यखड्ग श्वसंरा

जायाय जोग्य ॥ ५३ ॥ कुलशीलशुणोपेदसत्यधर्मपरायन ॥ प्रविनयश
लोदशोराजध्यासोविधीयते ॥ ॥ कुलवन्तः शीलवन्तः धर्मिष्ठचतुरविचक्षणा
क्षमावन्तः तथापि इह संराजायाय जोग्य ॥ ५४ ॥ कुरव्यः शान्तिनलुचमप्रगर्भस
मार्जव ॥ अनायव्यः यकर्त्तारं नापियन्यनियोजयत् ॥ ॥ क्रोधिव्यशानतत्रलो
भिभानिमजुवधवअर्जनमस्वस्यं वर्ययाकर्त्तराजायायमतेव ॥ ५६ ॥ मू
लवृत्तिहितोधीरसर्वरत्नपरिष्कः ॥ शुचिश्चकथिनश्चैव धर्माध्यक्षोविधीय
ते ॥ ॥ ह्यकार्यजुलसनहीनयाकसमस्तरत्नयायोरिदं सायाकवशिलवन्त ॥ ५७ ॥

शुचिव्यवशायाकध्वलंधर्मिकधाय ॥ ५८ ॥ आयुर्वेदकृताभ्याससर्वज्ञ
प्रियदर्शन ॥ आर्यशीलगुणोपेतयवैश्रोविधीयते ॥ ॥ वंगवआदिनवैप्र
शास्त्रसअभ्यासयाकनादीभैरशिवलोकवतुवशीलशोभावमीहथधि
इलवैप्रधाय ॥ ५९ ॥ पितृपितामहोदंशशास्त्रज्ञोमिष्टयाचक ॥ शुचिश्चकठि
नश्चैव शुचकारं प्रशस्यते ॥ ॥ ववुअजानिस्थविचक्षणाशास्त्रज्ञव्यावमी
इकठिरामजुवध्वलंसुवालधाय ॥ ६० ॥ सुकडुकटहीनार्थेलिगुहस्त
जिताक्षरसर्वशास्त्रसमालोकि एकलेखक उच्यते ॥ ॥ ह्योल्लासअर्थ

ममताथ

राम

सेव शिघ्रगोचरकव अक्षरयालियिनी शास्त्रशव ध्वल्लेखकधाय
॥६०॥ ईक्षिताकारतत्त्वसौबलवान्प्रियदर्शन ॥ अप्रमादिसदादक्षप्रतिहार
संयुज्यते ॥ कार्यया अनुसूयशिव बलवन्लोकवतुव प्रमादीनमुक्त्विव
क्षरा ध्वल्लेखप्रतिहारधाय ॥ ६१ ॥ समस्तकृतशास्त्रो यशिनश्चजिधमः ॥ धै
र्यसौख्यगुरोयेतसनाये शोविधीयते ॥ हर्ता कर्ता समस्तशास्त्रसव विनक्ष
रा समस्तशास्त्रसव धिर्यवन्त गुरावन्त थधिहलं मंत्रीधाय ॥ ६२ ॥ स
मस्तहयशास्त्रो वाहरोयुयराजित ॥ सौख्यवीर्यगुरोयेत अन्धाध्यक्षोवि

राम

॥१३॥

धीयते ॥ समस्तसलाया शास्त्रसव थव्यवहारसनेसव शूरवीर गुराव
न्त थथीहलं असुवारधाय ॥ ६३ ॥ मेधाविवाक्यनुप्राये परिचनौपरक्षक ॥
धीरोयथोक्तवादी च यवहृतोविधीयते ॥ शानिवचरातुव परबोधनायक
धीर्यवन्तजुकोतुल्लक ध्वल्लेखनकोय ॥ ६४ ॥ पार्थिवस्य च भर्तृशय
वडमिगुरालक्षरा ॥ येन संवर्द्धते राजा भराजगारस्तथैव च ॥ राजावदुर्गा
वराव गुरालक्षरा लक्षणव ग्वलसेन राजावृद्धिमानयाता ध्वल्लेखभराजि
धाय ॥ ६५ ॥ अतयवकुलीनानां दया कूर्वतिसंग्रह ॥ आदिमध्यावसानेषु
नतेयाशयतिविक्रियां ॥ कुलनदयावन्तलं भराजरियाजन आदिमध्य अन्तस

विक्रिया नयाक ॥ ६६ ॥ यशिते सुगुण सर्वे मूर्ख दोषस्तु केवला ॥ तस्मान्मूर्खस
 ह श्वेन प्राशने कं प्रसस्यते ॥ ॥ गुणसमस्तानी तं याके अगुणसमस्तं मूर्खसं
 याके ॥ थोतेन मूर्ख दोलद्वितोलता व शानी छलल्य यमाल ॥ ६७ ॥ प्राशनियो ज्य
 मानेतु संतिराशौ स्त्रियो गुणा ॥ यशस्वर्गनिवा शश्वदुस्कर श्वधना गम ॥ ॥ आ
 नी योजलया कार्यस राजा श्वता गुणा जु ईव ॥ छुर धाल सा जशकीर्ति परत्र
 स्वर्ग प्राप्ति लक्ष्मी वृद्धि जु ईव ॥ ६८ ॥ तस्मान्मूर्खे श्वरो नित्यं धर्मकामार्थवृद्ध
 ये ॥ गुणा व न नियो जने गुणा हीन विवर्जयत ॥ ॥ थतेन श्वस्त्रं राजान धर्मश्र
 र्थकामवृद्धया यन गुणा व न स्तन जो जलये माल गुणा हीन संतो लते माल ॥ ६९ ॥ ॥ १४ ॥

यत्कींचित्कुरुते भूय शुभं वा यदि वा सुभं ॥ येन संवर्द्धते राजा सुकृते उद्धते रयि
 गुणा व न स्तं जो जलयात शुभया जनं अ सुभया जनं सुकृतया जनं उद्धतया
 जनं राजा यालक्ष्मी वृद्धि यामीव ॥ ७० ॥ यथा हेमं यरिशने ता यता दनं छेदने ॥
 तथा युरुय मय वं कुल शीले न कर्मना ॥ ॥ गथे लुया यरि आया जथं ॥ द्रुया व द
 या व त्व कधे ज व स्वय ॥ थथं कुल शील स्वभाव मर्म कर्म युरुय या यरि आया
 य ॥ ७१ ॥ आतयं प्रक्षणे भूय वा श्व वा य शना गमे ॥ आयत्काले तथा मित्रा
 यो च विभवं क्षयं ॥ उगा वरा हीत स्वय ज्या छे स्यं सर्जन हीत स्वय आव

दास मित्रहीतस्वयदियनिसस्त्रीहीतस्वयधनमदतजव ॥ ७२ ॥ अत्यादुविधा
 राजन उन्नमाधममध्यामा ॥ तेनियो ज्वाथयो सा अस्त्रिविद्ये सोवकर्मसि ॥ उगाव
 न नीड मनीड अनकमाल उन्नमत्तं उन्नमथासजोजलयेमाल मध्ये मत्तं मध्यमथास
 जोजलयेमाल मनीड मनीड थासजोजलयेमाल ॥ ७३ ॥ आलस्यमूर्खरं कूरं
 तद्व्यशनिनं शतं ॥ असंतुष्टमनकंचत्यज्येत्तरत्यनराधियः ॥ अलासी क्रीडि
 व्यशनी हठि विकीनसंतुष्टमजुव नक्तिमह थथिड म्सेवक राजानतोल
 तेमाल ॥ ७४ ॥ त्यज्यस्वामिनमत्युगं मत्युगं कयनतेजेत् ॥ कयनादविशेषो ॥ १५ ॥

तस्मात्कृतनाशनं ॥ अतिउग्रस्वामितोलतेमाल उग्रमजुलसनंकयनि
 जुलजव कार्यभीडमनीड मशीलजव थस्वामितोलतेमाल ॥ ७५ ॥ वामाभा
 यस्सुतोमूर्ख प्रेषकोवाग्निचारकः ॥ निस्त्रहवधुवर्गश्च तेजेदस्य महत्सुरवं ॥
 थद्वियनिस समतिकलंस्त्री मूर्खलंकाय कोयाकार्यमयाकलंसेवक स्नेह
 महत्तं दाजुकिजा थयनितोलतानमहा सुखजुर्व ॥ ७६ ॥ नकश्चित्कस्यचित्
 मित्रं नकश्चित्कस्यचित्पिय ॥ कारणदेवजायने मित्रानेरियवसथा ॥ सर्जन
 मित्रद ईव कारणन सर्जनशत्रुद ईव कारणन शत्रुमित्रद ईव कारणदतजव

७६ ॥ कार्यार्थिभजने लोकनलोकयथैव मर्थक ॥ वसदीरथयं दृष्टाय रित्यज्य
 तिमातरं ॥ कार्यअनुसारनलोकनभजलपीव ॥ मथ्ये धालसासानान दुइतोनेमद
 नडावमानतोलतलं ॥ ७८ ॥ कुटोव्यशनिनेनिद्रा अहपस्यकुतोदति ॥ कुटः सौख्यं
 दरिद्रस्य दुर्जनस्य कुटः क्षमा ॥ ७९ ॥ दिनारचशनीया क्लिलमह वृषिम जुवसंगार
 तिरसमह दरिद्रसंगया सुखखं महु दुर्जनया क्षमाखं महु ॥ ८० ॥ तस्करस्य कु
 तोमान दुर्जनस्य कुट क्षमा ॥ व्यश्यास्त्रीणां कुतस्तेह कुतसत्यं च कामिनां ॥
 सुखया केमान्यखं महु दुर्जनया के क्षमाखं महु व्यश्यास्त्रीया के स्तेहखं महु ॥ ९६ ॥

कामिया के सत्यखं महु ॥ ८० ॥ दुर्वलस्य वलोराजा बालानां रुदितं वलं ॥ वलं मूर्ख
 स्य मोनत्वं चोरानां ननृतं वलं ॥ ८१ ॥ दुर्वलया वलया वलराजा बालखया वलखय
 मूर्खया वलनो मवाय खुया वलक सखा क्लाय ॥ ८२ ॥ अनाथानां दरिद्रानां वा
 लवृद्धितयश्चिनां ॥ अन्यायपरिभूतानां सर्वेषां यार्थिवोगति ॥ ८३ ॥ अनाथया दरि
 द्रया बालवया दरिद्रया तयश्चिना ॥ धनं यागति जुलं राजा ॥ ८४ ॥ व्याधितस्यार्थ
 हीनस्य शत्रुभिर्वाशितयच ॥ हृदयशोकदग्धस्य सुहृदं दर्शनं मौखधं ॥
 व्याधिनपीदलया वनो हया ॥ धनमोस्यं वो हया ॥ शत्रुवत्त्वाह नो हया ॥ स्वकननो

ॐ या ध्वने या वा शाल हीन जन या खाल स्व या वतन के ॥ ८३ ॥ आतुरे व्यशने प्राप्ते दुर्भि
 क्षरात्रु विग्रहे ॥ राजद्वारे रमशाने वा यति छंति सवा भववा ॥ ॥ लोय जुल जस्य आ
 यरा जुल मत्र नयन दले स शत्रु वल्ला जन राजा या कुट्टि जुल जव रमशान
 स ध्वने स विचाल या कलं वन्धु जन धाय ॥ ८४ ॥ भाव सुद्धि मनुष्या तां शातयं सर्व
 कर्मस्य ॥ भावेन सुचिता कान्ता भावेन दुहितानना ॥ ॥ सुदुष्य या कुजुल सनं भा
 वनात्र न स्त्री सुत्वलयं भावन रुपा च या खाल सुत्वलयं ध्वने न भावन खं
 तव ॥ ८५ ॥ न देवो विप्रते काहे या याने न च नम य भावे बु विप्रते देवो तस्मात्मा

॥ १७ ॥

वो मह नरै लो हो स सिमं देवता म ह गरा भाव अना देवता ध्वने न भावत
 धा ॥ ८६ ॥ शिष्याणां देवता चार्य ज्ञान माचार्य देवता ॥ देवता मोषिता भर्ता
 वाराण जन देवता ॥ ॥ शिष्य या देवता जुलं गुरु गुरु या देवता जुलं ज्ञान स्त्री
 जन या देव जुलं धव दुरुष लोक या देव जुलं प्रोक्षणा ॥ ८७ ॥ विप्रं यश
 यथा वक्ति राचार्य यश देवता ॥ दृष्टी यश यथा माता मित्रं यश यथा सु
 तं ॥ ॥ प्रोक्षणा स्वयं जुलं अग्नि थं गुरु स्वयं जुलं देवता थं मात स्वयं जु
 लं यथैवी थं काय स्वयं जुलं मित्र थं ॥ ८८ ॥ गुरु रग्नि दिजातिनां वणा

नां वांस्तरागुरु ॥ यतिरेको गुरुस्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरु ॥ ॥ वांस्तरायाः
 देवजुलं अग्न्याट चतुर्वर्ग्यागुरुजुलं वांस्तरा स्त्रीजनया देवजुलं यत्र पु
 रुषः समस्तयागुरुजुलं फकीर ॥ ८९ ॥ उत्तमस्यापि वर्गस्थ निचोयि गुरु
 मागत ॥ पूजनीये यथान्यायं सर्वस्याभ्यागतो गुरु ॥ ॥ उत्तमजातिजुलस
 नं नीचजातिजुलसनं अभ्यागतजुलं वैवल ॥ ९० ॥ पूजायायमाल सुयासिनं
 अभ्यागतगुरु ॥ ९० ॥ देवता पूजयन्मन्त्रा भृत्यादानेन पूजयन् ॥ शुद्धपूजो
 पकारेण विचाराणं मभिवंदने ॥ ॥ देवता पूजलेये भक्तिभावसा उग्रावरा ॥ ९८ ॥

पूजलयेधनविषयं सुद्धपूजलेयेथथ्ये उच्यते ॥ वांस्तरा पूजायायनमस्कारन
 ॥ ९१ ॥ धर्मश्च मूलराजनंतयो मूलं च वांस्तरा ॥ वांस्तरा यत्र पूज्यं ते तत्र धर्मश
 नातनः ॥ ॥ राजाया मूलधर्मः वांस्तराया मूलतपस्याः गरा वांस्तरा पूजायात
 अनाधर्मधायः ॥ ९२ ॥ आचार्यकलते धर्ममाचार्यकलते धनं ॥ आचार्य
 कलमाप्नोति ह्याचार्य हंतिलक्षणां ॥ ॥ धर्मकलदसीव आचार्यन धन
 कलदई आचार्यन समस्तकलदई आचार्यन समस्त अलक्षणा मदई
 आचार्यन ॥ ९३ ॥ भोजनो जनशक्तिश्चरति शक्तिश्च वरस्त्रियविभवो

दानशक्तिश्च नास्त्यस्य सय संकलं ॥ नययक वलं या भोज रति सं नोपाक
 य वलं या कलात दय द वलं दाता जुय ॥ धने कलं नि भाय न यस्या न लाय म
 ॥ ६४ ॥ बाले नै व वलं धर्म म नित्यं खलु जीवितं ॥ कलानां मयि य कानां श
 खत त य न क वं ॥ कल ख वेल स नित्यं धर्म या य माल अनित्य स सार से
 कुने किं ग सै य ल पथं हा से दु ईव ॥ ६५ ॥ सदं भव ह तो धर्म क्रोध ने व ह
 तं त यः ॥ अ द धं व ह तं श ने प्र मा दे न ह तं त यः श्र तं ॥ अ हं कारी जुल ज
 व धर्म मो ईव क्रोधि जुल ज व त ध मो ईव द द म जुल ज व त न मो ईव प्र ॥ ६६ ॥

मादि जुल ज व ने ज श स्र फो ल जु ईव ॥ ६६ ॥ अदिता नो ह तो हो स ह ता भु
 क्रि र सा छि काः ॥ उ य जि व्या ह तो क न्या ह ता भु क्रि र सा क्षि र का स्वार्थे यार्क क्रिया
 ह ता ॥ मि म हो र व हो म व्य र्थ सा क्षि म वा सें न या अ न्न फो हो र जु ईव व ग
 जि दा म का से वि या कं न्या दान नि स्फल जुलं थ व नि मि त्त न या य या ज अ न्न फो ल
 जु ईव ॥ ६७ ॥ दारि द्र्या धि दु स्वाय व ध नं य श ना ग मे ॥ अ दा तु फल मे ता
 नि त स्मा दानं वि शि ष्य ते ॥ दूर्व ज न म स द स्यं दान म या ज फल न आव ज न म
 स द रि द जु ईव व ध न जु ईव आ य दा जु ई थ ते मु माल के न दान धर्म या य मा

ल॥२८॥ सुलकाईवदानेषु पुत्रदाईवजन्तुषु॥ तादृशसोमनुष्येषु ये च धर्मवर्हि
 कृत॥ गवन्तुमनुष्यधर्मसरतमजुव॥ अधर्मसरतया जवजुव॥ धर्मयावास
 ककलित्थं धर्मेतादरी॥२९॥ तेजे दुर्जनसंसर्ग भजसाधुसमागमः॥ कुरुपुराणम
 होरात्रस्मरनित्यमनित्यता॥॥ असारसंसारमालयाव॥ दुर्जनवसंगमोलनेमाल॥ साधु
 जनसंगमाकुने॥ चानंद्निर्धर्ममाकुने॥ १००॥ इति श्रीचानक्यनानाशास्त्रसंग्रहे
 प्रथमशतक॥ १॥ शास्त्रार्थचक्षुषा विद्वान् नरेन्द्रानिति चक्षुषा॥ वेदार्थचक्षु
 षा विप्रैर्इतराश्चरक्षुषा॥॥ ज्ञानी ह्यस्य मित्रा जुलंशास्त्र॥ राजा यामित्रा जुलं॥२०॥

निति॥ चांस्तराया मित्रा वेद॥ ईमरजनयामित्रा जुलंचरित्र॥ १॥ राज्ञि धर्मनिध
 मिष्टाया ये यायसमेसमा॥ राजानं दुनित्यतिस्मायथा राजा तथा प्रजा॥॥ राजा धर्मा
 त्मा जुलसा प्रजानं धर्मात्मा जुईव॥ राजा यायि जुलसा प्रजानं यायि जुयीव॥ धर्मे
 नगर्थे राजा॥ अर्थप्रजा॥ २॥ सांम्यदानेन नैदेन कर्मन च बलेन च॥ सर्ववस्तु
 महाशत्रुघातयोनीनराधियः॥॥ सामदानेन देलये॥ यरियातिनवलवस्तुमो
 चकंस्त्रं॥ गवन्तु राजानं॥ धर्मे उयायया जनमोचकेमाल॥॥ ३॥ उग्रमसाहसं
 धैर्यं बलवुद्धिराक्रम॥ घडेनेयवतिष्ठति तत्र देवोपि संकित॥॥ ५॥ अमसा

हस. वल. बुद्धि. पराक्रम. धैर्य. श्वरुता. गलं. यादता. वलं. जुल. खल. वदेवता. जु
 ल. सनं. सं. का. वा. ॥ ४ ॥ यात्रे. त्यागी. गुरी. रागी. नो. गे. परि. जने. सह. ॥ शास्त्रे. बो. धार
 रो. यो. धान. नृ. यत्प. य. श्व. ल. अ. रा. ॥ सु. या. व. त्यागी. जु. य. उ. य. नो. ग. ल. ये. थ. व. परी. ज
 न. लु. थाने. शास्त्र. न. बो. ध. जु. य. र. न. स. स. र. जु. य. श्व. ज. ता. रा. जा. या. ल. अ. रा. ॥ ५ ॥ उ
 न. म. प्र. शि. पा. ते. न. श्रु. रो. मे. दे. न. यो. ज. य. त. ॥ ल. कु. म. र्थ. प्र. दा. ने. न. स. म. तु. ल्य. परा. क्र. म. ॥
 स. त्पु. रु. ष. जो. ज. ल. ये. न. म. स्का. र. रा. श्रु. र. जो. ज. ल. ये. न. म. स्का. र. रा. मे. ड. न. लो. भि. जो. ज. ल.
 ये. ध. न. वि. स्यं. तु. ल्य. जो. ज. ल. ये. कु. य. रि. त. न. ते. व. ॥ ६ ॥ आ. त्म. छि. द्र. य. रे. द. मा. वि. द्या. छि. ॥ २१ ॥

भा
 इ. य. र. स्य. च. ॥ ग. हे. कू. र्क. ई. वां. गा. शि. य. र. वं. न. ल. अ. य. त. ॥ ॥ थ. व. दो. ष. मे. व. य. ता. वि. म. ते
 व. मे. व. या. दो. ष. द. त. स. नं. ग. थ्ये. शि. शी. र. का. ल. स. का. य. ले. दु. ये. इ. थ्यं. ग. व. य. ल. यं. त. के. मा
 ल. ॥ ७ ॥ म. न. शा. चि. न्त्र. य. त्का. र्थ. व. न. शा. न. प्र. का. स. य. त. ॥ मं. व. ल. अ. रा. गु. र्मा. त्मा. का.
 र्थ. सि. धि. न. जा. य. ते. ॥ गो. न. बु. पु. रु. ष. न. का. र्थ. या. य. म. न. न. चि. न्त्र. ल. ये. त. व. म. सि.
 धु. तो. ले. व. च. न. प्र. का. श. या. य. म. ते. व. मं. त्र. थ्ये. गो. य. या. इ. त. य. मा. ल. ॥ ८ ॥ उ. य. त. र. ग.
 हो. ते. न. श. च. उ. रा. श. च. उ. र. रे. त. ॥ या. ड. ल. ग. न. क. र. स्थे. न. क. रा. ठ. के. नै. व. क. रा. ठ. कं. ॥ उ. य. त.
 मा. त. ज. स्यं. श. च. उ. न. या. ज. उ. य. त. का. र्थ. ता. थ्ये. मा. ल. ग. थ्ये. धा. ल. सा. तु. नि. स. का. थ. न. क.

ल्ये. कांठराधिस्यं युधिका यथे. तानीयुरुयनसे कुने ॥ २ ॥ वहेप्रिकं सुकधे
 नयावत्काविवर्जयत् ॥ ॥ तथैवरागते काले विद्या तन्मिवास्मनि ॥ ॥ थ
 वविधमिवेलश शत्रुजुलसनं. तुस्यं छुयमाल. थ वसंयति जुलजव तुस्यं
 छुया शत्रु. गथ्ये ल्वहो सदा इधल यो तोल येयार्थं. तोल फेरस्य कुने ॥ १० ॥
 हेजिह्वेकनुकस्नेह मधुरं किन्नावसे ॥ मधुरं वद कल्यानि लोकीय मधुप्रि
 यः ॥ ॥ हेजिह्वेयल्लवचनस्त्राय मते. चाकूवचनस्त्रात्र. चाकुवचनस्त्रालज
 वसमस्तु लोकसन्तोषजुव ॥ ११ ॥ जिह्वेय वसते लक्ष्मी जिह्वेय मित्रवाभवा ॥ २२ ॥

जिह्वेय वधनं श्यायि जिह्वेय मरणाक वं ॥ ॥ लक्ष्मी वसलपि वजिह्वेय. मित्रवाधल
 पीवजिह्वेय. धन्धनसे ईवजिह्वेय. मरणाजु ईवजिह्वेय ॥ १२ ॥ प्रियवाक्यप्रदा
 नेन सर्वतुष्यति जन्तवः ॥ तस्मात्तदेव ज्ञातव्यं किं वाक्यं परिदत्ता ॥ ॥ प्रियवाक्य
 लजव समस्त लोकसन्तोषजुव. थतेन वाक्यं परिदत्तुय मतेद ॥ १३ ॥ अग्निदोग
 रदधैव शस्त्रयाशिधनायहा ॥ अत्रदारायहारीच वडते जातना ईनः ॥ ॥ मित्रो लजु
 वल्लं. यशानकेया लजु वल्लं. शस्त्र अस्त्रन. अयद्यातया इजु वल्लं. मेवयामुमात्र
 युयया इजु वल्लं. थते वेरुनजु वल्लं खुधाय ॥ १४ ॥ आततायिनमायानि मयि वेदा

नकारां जिघ्राणां शक्तिजिघ्राणां नतेन डंस्त्रहा नवेन ॥ ॥ थो ते कर्मया ८ जुवलं चतु
 वेदशत्रुं जलसने मोचकान डंस्त्रहया यायन मके ॥ १५ ॥ राखुं पालयते नित्यं
 सत्यधर्मपरायन ॥ निजितपरसेनानी यतिधर्मनयालयत् ॥ ॥ राजानराज्याय जु
 लंधर्मसत्यन प्रजाप्रतिपालयाय थथेन तुनीयरसेनाजयलये जि ईव ॥ १६ ॥ पु
 थं पुष्यविनीन्या मूलहिन्दो नकारयत् ॥ मालाकार ईवाजानीय थाराजानि सारताम्
 ॥ ॥ राजाया अंकुशजुलं मालिनीया अंकुशायं स्थान हो कोतु थोयते व हांनया
 ल्पया जव मोचके मते व ॥ १७ ॥ अरिमित्रमुदाशीनं मध्यस्थं थविरो गुरु ॥ येन ॥ २३ ॥

बुधतिमंदात्मा सच सर्वत्र नश्यति ॥ ॥ रात्रुव शत्रुयनेन मित्रव मित्रयनेन मध्य
 स्थव मध्यस्थयनेन रात्रुनं मित्रनं मशिल जव थलं या कार्यना रात्रु ईव ॥ १८ ॥
 अनायव्ययकर्त्तरं अनाथ कलहप्रिय आतुरे सर्वं न क्षीय नरशिघ्रविनश्यति ॥ ॥
 मनुष्या आरमस्वस्थं वयया कलं राजाम ईदेश शरुग राया कलं श्रीघुनना शत्रु
 ईव ॥ १९ ॥ कः कालः कामिनित्रनि कोदेश कोव्ययागमे कस्याह कान मे शक्तिरिति चि
 न्तातुं कुतु ॥ ॥ कः कालः कुनिमित्र गोदेश कूदव वैरिया कूसक्त मित्रया कुसक्त
 थते निना वारं वार राजान याय माल ॥ २० ॥ सिंहादेकं ककादेकं शिखरवत्पारि कूक

दात॥ वायसात्र पंचसिद्धं च षट्स्थानस्त्रिनिगर्हनात्॥ ॥ सिंहया छतागुणा० बौहल
 या के छतागुणा० शिवाय के येतागुणा० कोषया के जतागुणा० शिवाय के युतागुणा० गा
 धुया के रचतागुणा० ध्वने गुणा सेने॥ २१ ॥ प्रभूतकार्यमल्यवायोनरः कर्तुमिच्छति
 सर्वारम्भेषु यत्कार्यं सिंहादेकं विधीयते॥ ॥ कूकार्यं यात स नर रा मया स्थेनि
 कर्षेन प्रभूतयनेन सिंहया के सेने गुणा॥ २२ ॥ इन्द्रिया नितु संयस्य वकव्यशिः
 एतोनरः॥ कार्यं काले प्रपन्नरि सर्वकार्यं नि साधयत्॥ ॥ बौहिलथी इन्तानीमनु
 ध्यन० थवकार्यं याये मफनौले यंच इन्द्रियनिग्रहया जवजुय० कार्यं यायफत ॥ २४ ॥

जव कूकार्यं नयाय॥ २३ ॥ प्रागुत्थानं च सुदृढं संविभागा च वस्तुयु॥ स्त्रीयमाक्रम्य भू
 जीतशिष्यचत्वारिकुर्कुयात्॥ ॥ सुधाते वलंदाने रात्रुजोधले ये शानि वस्तुतुले
 घने० स्त्रीसंयोगयाय० थयेतावाय के सेने गुणा॥ २४ ॥ गुडमैथुनदृष्टत्वं काले
 चालय संग्रहे॥ अप्रमादिसुर्चुर्मी च पंचशिष्यचवायसात्॥ ॥ मैथुनगुडजुय वै
 लसदुकाय० थवज्ञाती वस्तु च ललेये प्रमादिकुय० सुधर्नजुय० थवज्ञा करवया के
 सेने गुणा॥ २५ ॥ वहासि चाल्य संतुष्टा सुनिद्रा शिष्यचेतना॥ स्वामिभक्तं च भूरंच
 षडेते स्वानतो गुणा॥ ॥ दत्तजव अदीकनय मदतजव चि जायनं सतो यजुय

स्वामिभक्तिजुयशिघ्रगादेने शिघ्रनदाने चरुतरिवायाकेसेनेगुरा ॥ २६ ॥
 अविष्ठांतं भवेत्तारं शितोस्तं च न विन्दति ॥ स संतुष्टो म न क्तं च निशिष्य च गर्दभा
 ॥ थमया न कार्यमशिधु तोले आस मद्युय शीतताय सेहलये च्वस्युतागुरा गादु
 याके शोनेगुरा ॥ २७ ॥ विंशतेनागुरा जो कायस्तु कुर्या विचक्षरा ॥ प्रविष्यतिरियु
 सर्वान् नजयश्च न विष्यति ॥ ॥ ध्वनीयतागुरा ग्व स्या के दता वल्लं विचक्षरा ॥
 समस्तशत्रु मोचके ईव ॥ २८ ॥ अमूर्खो यो मनुष्यानां मत्पुंसात्तपचेतसां ॥ पर ॥ २५ ॥
 त्यरो यकारेन पुंसा भवति ग्रहं ॥ ॥ मूर्खं मज्जुवज्ञानिलोकन निरर्थकं चेतसं मोच

नगृह्णती न वंशती न प्रार न रक्षका ॥ न वन्धो नैव वन्धा वा स्वशीला च कुलस्त्रियं ॥ ॥
 के शदे शया प्राकार रारक्षामज्जुव विना कुलया कं न्याने तु नीर सायायीव ॥ २५ ॥
 नदीयातयते तीरं नारीयातयते कुलं ॥ नारिनां च नदीनां च स्वहृन्दललिता गति ॥ ॥
 नदी नथ वतीर कुटिन कलं मिशान थ वतीर कोती वतीर कुलकोती न कलं नदी
 वमिश्रा वउ थं स्वहृन्द न च लल युजु ईव ॥ २६ ॥ लताया ध्वं स्थितं वृक्ष च त्वाया ध्वं
 स्थितं नृप ॥ धार्ध्वं स्थितं वृक्षं योषि दृश्यति नरां शय ॥ ॥ शिमा को स चो इगुषी
 नसिमा मशीव राजान थ व या स स चो इ स से व क घ मया ईव मिशान थ व या स

सचोइहं पुरुषका ईव थथे संसयमुमाल ॥ ७७ ॥ नैवयश्यति जानाध्वकामाधोने
 वयश्यति ॥ नयश्यति न दोनमनो अर्थतो नैवयश्यति ॥ ॥ वीयतिकाननमखाइ का
 माधनमखाइ ॥ अहंकारिनमखाइ तवधाइ नमखाइ ॥ ७८ ॥ जीर्णमन्त्रप्रशयति
 भास्योचगनयौवन ॥ रनप्रत्यगतंभूरं शयनगृहमागत ॥ ॥ जीर्णवनकंनयाअन्न
 ॥ भीइ ॥ जौवनवित्तजवस्त्रीभीइ ॥ संगामनजयलयावशूरभीइ ॥ यशजुलंछेसथ्येइ
 लीभीइ ॥ ७९ ॥ लक्ष्मीलक्षनहीनेच ॥ कुलहीनेसरस्वती ॥ अपावरमतेनारीगिरी
 वर्धतिवासव ॥ ॥ लक्षनमहुलंकाकेचोइलक्ष्मी ॥ कुलहीनकाकेचोइसरस्वती ॥ ॥ ८० ॥

कुपात्रवप्रसंगयाकामिसा ॥ इन्दुशय्यवतसवागाचकार्य ॥ ८० ॥ यस्यनार्यविहया
 शिकस्मरिकलहयि ॥ उत्तरोत्तरवादिचसाजराजराजरा ॥ ॥ गवहंयास्त्रिवि
 रूपी ॥ शुचिमलाक ॥ उत्तरात्तरनलाययव ॥ थथीइहंस्त्रीयताजराधाय ॥ ८१ ॥ यस्य
 भार्यास्वरूपाचभर्तारमनुगामिनी ॥ नित्यमधुरनाधिवसाश्रियानश्रियाश्रिया ॥ ॥
 गवहंयास्त्रीरूपवती ॥ पुरुषयावसासचोइ ॥ हिथंकावरवचनहाक ॥ थलंस्त्रीलक्ष्मी
 वनुल्यधाय ॥ ८२ ॥ यस्यभार्यागृहेनित्यंशुनिवपरिगर्जति ॥ तस्यसिदंतिगात्रनियनि
 निवहिमालय ॥ ॥ गवहंयास्त्रीनस्त्रिचानउडाथेचाययव ॥ मा ॥ थलंयाशरीरयुन

दावपलेखानेथं॥ ८३॥ यस्य गृहेषु नार्यान्मार्गैर्वहितकारिणी॥ वर्द्धते तस्य गात्रा नी
 शुक्लपक्षयथाशशि॥ ॥ गृहं यास्त्री न मानन हीतया ज्ञाथं सेवायायीत् त्वत्संया
 सरीरचन्द्रमाजावथं वृद्धमानजुयीव॥ ८४॥ किं जाते वज्रभियुत्रे शोकशन्नायका
 रकै॥ वरयकं कुलालमिव च विष्णुसत्तेकुलं॥ ॥ तव स्तं कायदया वृद्धाय शोकसं
 नाययायीव कुलधललयुत्तं हस्तं कायनं गाक॥ ८५॥ एकनार्यावयं धुत्रा वेह
 लेदशधेनव॥ कन्या कालावसाने धिनते यास्यति विविधिया॥ ॥ स्त्रिहस्तं कायस्वस्तं॥
 हलनेगुडुडमया यदवसाजितं लिवाक्या च हस्तं ध्वते संजुक्तजुवस्तं याडुखजु ॥ ३५॥

यमह॥ ८६॥ यस्तव्यावहवधुत्रा गयामेको यदि व्रजे॥ यस्तव्यावधुमेधेन नील
 वान्धुयमुत्सजेत्॥ ॥ तव स्तं कायदतज्ञव हस्तं गयवनीव ध्वस्तं यता अश्वमे
 धस॥ ज्ञेया ज्ञपुण्य नीलवृषतदानया ज्ञपुण्यलाईव॥ ८७॥ एकेनाशुक्लवृक्षेन
 दद्यमानेन वक्रिना॥ दस्यते तद्वनं सर्वकुपुत्रेन कुलं यथा॥ ॥ हस्तासिमाशाङ्गन
 मीननयाव गुणायो हलपीव थयेकुपुत्रेन कुलमोचकीव॥ ८८॥ एकेनायिषुक्
 वृक्षेन पुष्यतेन सुगन्धिना॥ वाशितं तद्वलं सर्व सुपुत्रेन कुलं यथा॥ ॥ हस्तासिमास
 स्त्वनहीव न गुनयांनासाचकलं थथे सुपुत्रेन कुल उधारयायीव॥ ८९॥ यश

पुत्रावसानाभ्यामायुःकृतं ननु गामिनी विभवेऽपि संतुष्टा स्वर्गतस्य न हीतले ॥ गवत्संया
 पुत्रसेवकस्त्रीयनी सकलं धनवसासचोऽधननगाकः प्वत्संयापृथ्वीयस्वर्गधाय
 ॥ ६० ॥ यपुत्रास्तेयितुर्न रथांसयिता मयियोस्तु योषकः ॥ तन्मित्रं यत्र विश्वासं सता
 र्थाय वीनदृति ॥ गवत्संपुरुषयाकायः वबुयावसासचोऽधनकायधायः गव
 त्संसेनरदायाऽप्रतियालयाताः प्वत्संवबुधायः गवत्संपुरुषयाविश्वासदताः प्व
 त्संमित्रधायः गवत्संपुरुषयावसासचोऽधनस्त्रीधायः ॥ ६१ ॥ यस्य जीवति जीव
 तिविप्रामित्रं च भवति ॥ सकलं जीवितं तस्य आत्मा र्थको न जीवती ॥ गवत्संतुष्य ॥ ६६ ॥

जन्मनुयावः प्रांसरा मित्रकं भवदयीवः प्वत्संयाकायसायकल्यधायः ॥ ६२ ॥ स जीवति
 गुराण्यस्य यस्य धर्मस जीवति ॥ गुराधर्मा विहीनस्य निस्कलं तस्य जीवितं ॥ गवत्सं
 नुष्यया गुराधर्मादताः प्वत्संयाकायकल्यधायः गवत्संया गुराधर्मादताः वक्ष्यमनुष्य
 म्वाकायानिस्कलधायः ॥ ६३ ॥ वानासरस्वती यस्य भाय्यी रूपवती स्तथा ॥ लक्ष्मीत्याग
 वतियस्य सकलं तस्य जीवितं ॥ गवत्संयाचनससरस्वती चो नः स्त्रीरूपवती जुलंदा
 तयाय अर्थनः धननगाकः प्वत्संयाकायसायकल्यधायः ॥ ६४ ॥ धर्मो र्थकामनोदा
 राण्यस्य कीचिनविप्रते ॥ अजागरत्वरस्वयि निरर्थं तस्य जीवितं ॥ गवत्संतुष्यया

धर्म. अर्थ. काम. मोक्ष. ध्वयेतासकृता. ग्वलयासदता. ध्वलंवा जयानिस्फलय
 ६५॥ धर्मसंगविहीनस्यदिनयानिचवित्रियां॥ सलोहकारवस्तस्यस्वयं नैव प्रजीयते
 ॥ धर्मसत्यमद्वयं. व्यर्थनदीनहानीव. ध्वलंयाता रसी गथेधाल सा. न्या नों डा
 स्वतंनयावयूकथ्य॥ ६६ ॥ रात्रोरथिगुणावाचा. दोषावाचागुरोरथि॥ युक्तायुक्तं
 वायाहं नवचोगुरुय गोरका॥ ॥ गुणयाखरात्रुयाजुलसंनैनेजोग्य. दोषयाखगु
 रुयाजुलसंनंमनेने. जथाजोग्यगुरुजुलसंनंमोयमाल॥ ६७ ॥ अकर्तव्यंनक
 र्त्तव्यंप्राणैकरीतेरथि॥ कर्तव्यंनैवकर्तव्यंप्राणैकरीतेरथि॥ ॥ यायमतेवगुलि ॥ ६८ ॥

कण्ठतोप्राणथेनसतं. यायेमतेव. यायतेवगुलि कण्ठतोप्राणथेनसतंयायमा
 ल॥ ६८॥ अहिरणमुदासीनं गृहं गौरसवर्जितं॥ प्रतिकुलकलवंचनरकस्यापरो
 विधी॥ ॥ लुमडुके. मोचामडुके. मिसामडुके. धलीडुडमडुके स्त्रीयुखुवल्वाय
 यागुके. धुलिनर्कवतुल्य॥ ६९ ॥ स्थूलंजंघोयदारामौलक्ष्मशांसकृगामिनि. घ
 नकेशियदासीतातदातेडु. खनागिनी॥ ॥ श्रीरामचन्द्रयाकेकेयातितवधाह. लक्ष्म
 नयाजयवेलसकदव. शीतायासातवपू. ध्वतेयानिमित्तनडु. खनागिजुला॥ ॥
 १००॥ ॥ इतिचानव्यसारनानाशाखसंग्रहेद्वितीयशतकः समाप्तः ॥

काले हरिपुनासम्भि. काले च मित्रविग्रहे ॥ कार्यकारनमाश्रय कालधर्पतिपरि
 तः ॥ ॥ कारणानशत्रुत्वसम्भीयाये. कारणानमित्रवधियुद्धयाय. कार्ययाहेतुनरुने
 काल. आनीजननसेडुने ॥ १ ॥ कालयचतिभूतानिकालसंहरते प्रजा ॥ कालसुप्तेषुजा
 गति. काले हि उरति क्रमः ॥ ॥ कालनसमस्तप्राणिनाकवनीव. कालनप्रजाहरन
 जुईव. कालसजागलयंचोने. थयीः कालगुलिपुलकेमजीव ॥ २ ॥ कालात्प्रशोह
 ते राजंफलं कालाप्रवर्तते ॥ कालं प्रवर्द्धते पृथि पुनः कालेधिसंहरते ॥ ॥ कालयाके
 नानपुपिय. कालयाकेनानसेसयिव. कालनशृष्टियायीव. कालनमोचकीव ॥ ३ ॥ ॥ ३८ ॥

वलिः शोभमिरापथचन्द्रार्कनरमाहृतः ॥ सर्वसंहरते कालनयुक्ताकालोमहतरं ॥ ॥ आ
 कासनेमि. लषचन्द्रसूर्य. अग्निवायु. ध्वतेसमस्तकालनमोचकीव. ध्वतेन कालनव
 धाः ॥ ४ ॥ किंकरिष्यतिवक्रान् आतायवनविग्रते ॥ नगच्छेयनकपाते. रजकं किंकरिष्य
 ति ॥ ॥ खक्षायावपुयाय. ध्वखा. ग्वथासनेऽमदले. आनीयलिः तक्षुप्रयोजनगथे
 धालसा. योविः नोऽनागायादे शसः धोवियाक्षुप्रयोजनः ॥ ५ ॥ कदलीवनमध्यस्थे
 वक्रिमराऽपराक्रमः ॥ अविवेकिजनस्थाने गुरावाकिं प्रयोजनः ॥ ॥ कलीलवनस
 तयामि. वललाऽकोयमकूथं. विचालमहजनयाथास. गुरावन्नक्षुयाय ॥ ६ ॥

प्रलयभिन्नमर्जादाभवन्निकिलसागरा॥ सागराभेदमिच्छन्ति प्रलयपिनसाधवः प्र
 लयकालसमर्जादासागराधैल्लयुः साधूजनजुकोयाप्रलयकालसमर्जादामतोत
 ल॥ ७ ॥ मेरुश्चरतिकल्यानेमर्जादासागरस्थच॥ प्रतिपन्नमहासत्त्वानवरत्निकदाचन॥
 कल्यांतसमेरुपर्वतंचंचलयुः समुद्रनंसिमानमधल्लयुः साधूजनयाजुकोपुडुः खसु
 खजुलसनं कुमार्गसमवाह॥ ८ ॥ विप्रतेस्त्रीषुचपलोविप्रतेब्राह्मणोतय॥ पारुष्यं वि
 प्रतेनीच॥ दयासाधूषुविप्रते॥ ॥ स्त्रीजनयाकेरुंचलदत्त॥ ब्राह्मणयाकेतयस्यादत्त॥ नी
 चयाकेष्टाकवचनदत्त॥ साधूजनयाकेदयादत्त॥ ९ ॥ साधूसन्मानमात्रेनभवन्तिदे ॥१२॥